REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 12 | ISSUE - 12 | SEPTEMBER - 2023

पिछड़ी जनजाति एवं अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके सामाजिक–आर्थिक स्तर के प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

Sanjay Kumar Prabhakar[1] and Dr. Anil Kumar Shukla[2]
[1]Research Scholar, Sai Nath University, Ranchi, Jharkhand.
[2]Professor, Faculty of Education, Sai Nath University, Ranchi.

सारांश

देश की आजादी के इतने वर्षों पष्चात् भी ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले व्यक्तियों का शैक्षिक विकास नहीं हो पाया है। अनुसूचित जनजाति के व्यक्तियों में यह और भी कम देखा गया है। विशेष पिछड़ी जनजाति के लोगों में यह विकास अल्प मात्रा में ही दिखाई पड़ता है। अनुसूचित जनजाति समूहों का सामाजार्थिक स्तर कम है। विशेष पिछड़ी जनजातियों के व्यक्तियों का सामाजार्थिक स्तर भी अति न्यून है। शोध निष्कर्ष के अनुसार सामाजार्थिक स्तर का प्रभाव शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ता है। अतः अनुसूचित जनजातियों के व्यक्तियों के सामाजार्थिक स्तर के विकास पर ध्यान दिया जाना होगा। यदि अनुसूचित जनजाति तथा विशेष पिछड़ी जनजातियों के बच्चों को उचित षिक्षा प्राप्त करने में मदद दी जाएगी तभी वे देश की मुख्य धारा में रहकर देष की भलाई के लिए कुछ करने में पूर्णतः सक्षम हो सकेंगे।

प्रस्तावना–

भारत में शिक्षा का दायित्व है समाज के विभिन्न वर्गो को साथ लाना और एकजुट समतावादी समाज का निर्माण करना। देश के दूर वनांच्छादित पठारों, पहाड़ियों तथा बीहड़, अगम्य अंचलों में कई जातियाँ निवास करती हैं इन्हें वन्यजाति, आदिवासी, वनवासी, जनजाति और गिरिजन आदि नामों से संबोधित किया जाता है। इन जातियों के विद्यार्थियों में सामाजिक एवं आर्थिक स्थितियों के कारण शाला में उपस्थिति संबंधी अनियमितता एवं शाला त्याग देखने को मिलता है। इस सवं र्ग के लोगों में से अधिकांशतः अशिक्षित हैं, उनकी षिक्षा का विकास अभी नहीं हो पाया है। तात्पर्य यह है कि आज भी सामाजिक आर्थिक एवं भौगोलिक परिस्थितियों के कारण विषेष पिछड़ी जनजातियाँ (बैगा, पहाड़ी कोरवा, अबुझमाड़िया, कमार, बिरहोर) एवं अनुसूचित जनजातियाँ औपचारिक शिक्षा से दूर हैं, यही बात उनके विकास में बाधक है।

शोध के उद्देश्य –

शोध के उद्देश्य निम्नानुसार है –

1. निम्न/मध्यम/उच्च सामाजार्थिक स्तर के विशेष पिछड़ी जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना ।
2. निम्न/मध्यम/उच्च सामाजार्थिक स्तर के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना ।

परिकल्पनाएँ –

प्रस्तुत शोध के लिए निम्नलिखित परिकल्पनाएँ निर्मित की गयी हैं –

01. निम्न सामाजार्थिक स्तर के विशेष पिछड़ी जनजाति एवं निम्न सामाजार्थिक स्तर के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जाएगा।
02. निम्न सामाजार्थिक स्तर के वि. पि. जनजाति एवं मध्यम सामाजार्थिक के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जाएगा।
03. निम्न सामाजार्थिक स्तर के वि. पि. जनजाति एवं उच्च सामाजार्थिक स्तर के अनुजनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जाएगा।
04. मध्यम सामाजार्थिक स्तर के वि. पि. जनजाति एवं निम्न सामाजार्थिक स्तर के अनुजनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जाएगा।
05. मध्यम सामाजार्थिक स्तर के वि. पि. जनजाति एवं मध्यम सामाजार्थिक स्तर के अनुजनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जाएगा।
06. मध्यम सामाजार्थिक स्तर के वि. पि. जनजाति एवं उच्च सामाजार्थिक स्तर के अनुजनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जाएगा।
07. उच्च सामाजार्थिक स्तर के वि. पि. जनजाति एवं निम्न सामाजार्थिक स्तर के अनुजनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जाएगा।
08. उच्च सामाजार्थिक स्तर के वि. पि. जनजाति एवं मध्यम सामाजार्थिक स्तर के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जाएगा।
09. उच्च सामाजार्थिक स्तर के वि. पि. जनजाति एवं उच्च सामाजार्थिक स्तर के अनुजनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जाएगा।

परिसीमन–

- प्रस्तुत शोध का परिसीमन रामगढ जिले की उच्च प्राथमिक शालाओं के विद्यार्थियों तक है।
- यह अनुसंधान कार्य. जिले के प्राथमिक विद्यालयों तक सीमित किया गया
- प्रस्तुत अनुसंधान में केवल शासकीय विद्यालयों को लिया गया
- यह अनुसंधान केवल प्राथमिक शिक्षा मण्डल रामगढ़ के अन्तर्गत आने वाले विधार्थियों के लिए किया गया
- ये सभी नियमित विधार्थी हिन्दी माध्यम से ही लिया गया

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययनः –

खान (2000) द्वारा प्रतिभाशाली उपलब्धिकर्ता तथा निम्न उपलब्धिकर्ता का व्यक्तित्व, आवश्यक उपलब्धि तथा सामाजिक आर्थिक स्तर के सन्दर्भ में अध्ययन किया। अनुसंधान का उद्देश्य था कि प्रतिभाशाली उपलब्धिकर्ता तथा निम्न उपलब्धिकर्ता से सम्बन्धित कारक प्रारूप को ज्ञात करना। प्रतिदर्श के रूप में 128 प्रतिभाशाली उच्च उपलब्धिकर्ता तथा 100 प्रतिभाशाली निम्न उपलब्धिकर्ता को लिया गया। अध्ययन के परिणाम इस प्रकार प्राप्त हुए (1) उच्च उपलब्धि प्रतिभाशाली बच्चों की तुलना में निम्न उपलब्धि प्रतिभाशाली बच्चें में अक्सर व्यवहारिक अपरिपक्वता, भावात्मक अस्थिरता, अपर्याप्तता की भावना तथा बैचेनी की भावना निश्चित तौर पर होती है। (2) उच्च उपलब्धिकर्ता में स्वमहत्ता की सुदृढ़ भावना, सांवेगिक अस्थिरता से सामना करने तथा स्थिर रहने की भावना होती है।

सक्सेना (2000) ने पारिवारिक सम्बन्धो का समायोजन, तनाव, उपलब्धि अभिप्रेरणा, आत्म संकल्पना तथा शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया। इन्होने अपने अध्ययन में पाया कि पारिवारिक सम्बन्ध विद्यार्थियों के समायोजन में निर्धारक भूमिका निभाते है।छात्र व छात्राओं के मध्य भावात्मक, सामाजिक तथा शैक्षिक समायोजन में अन्तर पाया गया। छात्रों में शैक्षिक समायोजन छात्राओं की अपेक्षा बेहतर था।

गुप्ता (2001) ने विभिन्न सामाजिक आर्थिक स्तर की विद्यालयी किशोरियों के सामाजिक समायोजन का शिक्षा के सन्दर्भ में अध्ययन किया। इन्होने अपने अध्ययन में पाया कि (1) शहरी क्षेत्र के विद्यालयों में पढ़ने वाली किशोरियाँ सामाजिक समायोजन में ग्रामीण क्षेत्रो की किशोरियों से बेहतर पायी गई। (2) प्राइवेट विद्यालयों

की छात्राओं का सामाजिक समायोजन सरकारी विद्यालय की छात्राओं से बेहतर था। (3) अंग्रेजी माध्यम वाले विद्यालयों की किशोरियों का हिन्दी माध्यम वाले विद्यालयो की किशोरियों की तुलना में सामाजिक समायोजन उच्च पाया गया। (4) माता–पिता की शिक्षा का सकारात्मक प्रभाव भी किशोरियों के सामाजिकता पर पड़ता है।

डी.सी. क्रिस्टी (2002) ने अंग्रजी को द्वितीय भाषा के रूप में लेने वाले विद्यार्थियों की सृजनात्मकता एवं कल्पनाशीलता में वृद्धि के सन्दर्भ कार्य किया। शिक्षकों का मानना है कि प्रत्येक व्यक्ति के सृजनात्मकता एवं कल्पनाशीलता होती है तथा शिक्षक की भूमिका उन गुणों का पोषण करना है। वह नवाचार एवं खोजने वाले चिंतन को उपलब्ध करने के लिए मुक्त प्रश्न करते हैं तथा विद्यार्थियों को अपनी अनोखी सूझ एवं चिंतन के लिए अभिप्रेरित करते हैं।

प्रसाद (2002) ने बौद्धिक व अबौद्धिक कारकों का गणितिय सृजनात्मकता के साथ सम्बन्धो का अध्ययन किया। कक्षा सातंवी के 540 विद्यार्थियों को प्रतिदर्श के रूप में लिया गया तथा यह पाया गया कि गणितीय उपलब्धि के चरों तथा गणितीय सृजनात्मकता में सार्थक रूप से धनात्मक सह सम्बन्ध है।

ब्रैडले फिनवार (2003) ने सृजनात्मकता विषय पर अनुसंधान कार्य किया। यह अनुसंधान यह तर्क प्रस्तुत करता है कि यदि अधिगम वातावरण को समुदाय में गहरे अर्थो में निर्मित किया जाये तो सृजनात्मकता को बहुत अधिक विकसित किया जा सकता है। शिक्षा जिसकी जड़ों में कला स्थित हों, नवाचार आधारित देश के लिए परिस्थितियाँ प्रदान करती है।

चेयुंग एवं अन्य(2003) द्वारा हाँगकाँग के प्राथमिक विद्यालय के बालकों की सृजनात्मक लेखन कौशल शिक्षण पर अनुसंधान किया गया जिसके लिए सेम्पल के रूप में 499 चाइनीज भाषा के शिक्षकों को सम्मिलित किया। शिक्षकों ने यह माना कि सृजनात्मकता के लिए मुक्त वातावरण प्रदान करने एवं आत्मविश्वास विकसित करने की आवश्यकता है लेकिन सभी पंरपरागत तरीकों से ही लेखन शिक्षण कर रहे हैं।

डिसेथ (2003) ने कक्षा नवीं तथा ग्यारहवीं कक्षा के किशोर एवं किशोरियों की बुद्धि तथा शैक्षणिक उपलब्धि का तुलनात्मक अनुसंधान किया तथा निष्कर्ष यह थे कि कक्षा ग्यारहवीं के उच्च बुद्धिजीवी व बहुत उच्च बुद्धिजीवी लड़के एवं लड़कीयो की शैक्षणिक अचिवमेंट के बीच अन्तर नहीं था। सामान्यतः लड़कों के बुद्धि परीक्षण के आँकड़े लड़कियों से अधिक प्राप्त हुए। लड़कों की बुद्धि परीक्षण आँकड़ो तथा शैक्षणिक अचिवमेंट में उच्च कोरिलेशन पाया गया जबकि लड़कियों में औसत सहसम्बन्ध पाया गया।

शोध विधि– शोध हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

न्यादर्श– प्रस्तुत शोध हेतु रामगढ जिले की विभिन्न शालाओं के कक्षा 7वीं में नियमित अध्ययनरत 120 विद्यार्थियों (60 छात्र–छात्राएँ विशेष पिछड़ी जनजाति के तथा 60 छात्र–छात्राएँ अनुसूचित जनजाति) का यादृच्छिक विधि द्वारा चयन किया गया।

उपकरण– प्रस्तुत शोधकार्य में प्रदत्तों के संकलन के लिए शोधकर्ता द्वारा निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया गया है –

1. शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण – स्वनिर्मित
2. सामाजार्थिक मापनी – प्रमाणिक उपकरण, राजीव लोचन भारद्वाज द्वारा निर्मित

चर – प्रस्तुत शोध के चर निम्नानुसार हैं –

(1) सामाजार्थिक स्तर–स्वतंत्रचर (2) शैक्षिक उपलब्धि–आश्रित चर।

सांख्यिकीय विश्लेषण– प्रस्तुत शोध में सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मध्यमान के अंतर की सार्थकता (ज मान) तथा सह संबध की गणना की गयी।

परिकल्पना क्रमांक – 01

"निम्न सामाजार्थिक स्तर के विशेष पिछड़ी जनजाति एवं निम्न सामाजार्थिक के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जाएगा।"

सारिणी क्रमांक – 01

समूह	न्यादर्श संख्या	प्राप्तांकों का मध्यमान	मानक विचलन	df	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता
निम्न सामाजार्थिक स्तर के वि. पि. जनजाति के विद्यार्थी	21	10.62	1.1265	35	2.78	1% तथा 5% विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर है।
निम्न सामाजार्थिक स्तर के अनु. जनजाति के विद्यार्थी	16	13.75				

निम्न सामाजार्थिक स्तर के विशेष पिछड़ी जनजाति एवं निम्न सामाजार्थिक स्तर के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों में 1% विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर है। अतः परिकल्पना क्रमांक – 01 स्वीकृत की गयी।

परिकल्पना क्रमांक – 02

"निम्न सामाजार्थिक स्तर के विशेष पिछड़ी जनजाति एवं मध्यम सामाजार्थिक के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जाएगा।"

सारिणी क्रमांक – 02

समूह	न्यादर्श संख्या	प्राप्तांकों का मध्यमान	मानक विचलन	df	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता
निम्न सामाजार्थिक स्तर के वि. पि. जनजाति के विद्यार्थी	21	10.62	0.804	50	9.36	1% तथा 5% विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर है।
मध्यम सामाजार्थिक स्तर के अनु.जनजाति के विद्यार्थी	31	18.16				

निम्न सामाजार्थिक स्तर के वि.पि. जनजाति एवं मध्यम सामाजार्थिक स्तर के अनुजनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों की सार्थकता में 1% विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर है। अतः परिकल्पना क्रमांक–02 स्वीकृत की गयी। मध्यम समाजार्थिक स्तर के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अधिक है।

परिकल्पना क्रमांक – 03

''निम्न सामाजार्थिक स्तर के विशेष पिछड़ी जनजाति एवं उच्च सामाजार्थिक स्तर के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जाएगा।''

सारिणी क्रमांक – 03

समूह	न्यादर्श संख्या	प्राप्तांकों का मध्यमान	मानक विचलन	df	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता
निम्न सामाजार्थिक स्तर के विशेष पिछड़ी जनजाति के विद्यार्थी	21	10.62	1.7385	32	40.34	1% तथा 5% विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर है।
उच्च सामाजार्थिक स्तर के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थी	13	80.76				

निम्न सामाजार्थिक स्तर के विशेष पिछड़ी जनजाति एवं उच्च सामाजार्थिक स्तर के मे अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों में 1% विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर हैं। अतः परिकल्पना क्रमांक – 03 स्वीकृत की गयी।

परिकल्पना क्रमांकंक – 04

''मध्यम सामाजार्थिक स्तर के विशेष पिछड़ी जनजाति एवं निम्न सामाजार्थिक स्तर के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जाएगा।''

सारिणी क्रमांक – 04

समूह	न्यादर्श संख्या	प्राप्तांकों का मध्यमान	मानक विचलन	df	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता
मध्यम सामाजार्थिक स्तर के वि. पि. जनजाति के विद्यार्थी	30	16.36	0.969	44	2.69	1% विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर है।
निम्न सामाजार्थिक स्तर के अनु. जनजाति के विद्यार्थी	16	13.75				

मध्यम सामाजार्थिक स्तर के विशेष पिछड़ी जनजाति एवं निम्न सामाजार्थिक स्तर के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों में 1% विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर हैं। अतः परिकल्पना क्रमांक – 04 स्वीकृत की गयी। मध्यम समाजार्थिक स्तर के विषेष पिछड़ी जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अधिक पायी गयी।

परिकल्पना क्रमांक – 05

''मध्यम सामाजार्थिक स्तर के विशेष पिछड़ी जनजाति एवं मध्यम सामाजार्थिक स्तर के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जाएगा।''

सारिणी क्रमांक – 05

समूह	न्यादर्श संख्या	प्राप्तांकों का मध्यमान	मानक विचलन	df	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता
मध्यम सामाजार्थिक स्तर के विशेष पिछड़ी जनजाति के विद्यार्थी	30	16.36	3.1726	59	2.53	5% विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर है।
मध्यम सामाजार्थिक स्तर के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थी	31	18.16				

मध्यम सामाजार्थिक स्तर के विशेष पिछड़ी जनजाति एवं मध्यम सामाजार्थिक स्तर के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियो की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों में 5% विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर है। अतः परिकल्पना क्रमांक–05 स्वीकृत की गयी। मध्यम समाजार्थिक स्तर के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अधिक पायी गयी।

परिकल्पना क्रमांक – 06

''मध्यम सामाजार्थिक स्तर के विशेष पिछड़ी जनजाति एवं उच्च सामाजार्थिक स्तर के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जाएगा।''

सारिणी क्रमांक – 06

समूह	न्यादर्श संख्या	प्राप्तांकों का मध्यमान	मानक विचलन	df	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता T
मध्यम सामाजार्थिक स्तर के विशेष पिछड़ी जनजाति के विद्यार्थी	30	16.36	1.788	41	36.01	1% तथा 5% विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर है।
उच्च सामाजार्थिक स्तर के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थी	13	80.76				

मध्यम सामाजार्थिक स्तर के विशेष पिछड़ी जनजाति एवं उच्च सामाजार्थिक स्तर के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों में 1% तथा विश्वास 5% स्तर पर सार्थक अंतर है। अतः परिकल्पना क्रमांक – 06 स्वीकृत की गयी। उच्च समाजार्थिक स्तर के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अधिक पायी गयी।

परिकल्पना क्रमांक – 07

''उच्च सामाजार्थिक स्तर के विशेष पिछड़ी जनजाति एवं निम्न सामाजार्थिक स्तर के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जाएगा।''

सारिणी क्रमांक – 07

समूह	न्यादर्श संख्या	प्राप्तांकों का मध्यमान	मानक विचलन	df	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता
उच्च सामाजार्थिक स्तर के वि. पि. जनजाति के विद्यार्थी	09	20.88	2.29	23	3.101	1% विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर है।
निम्न सामाजार्थिक स्तर के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थी	16	13.75				

उच्च सामाजार्थिक स्तर के विशेष पिछड़ी जनजाति एवं निम्न सामाजार्थिक स्तर के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों में 1% विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर है। अतः परिकल्पना क्रमांक – 07 स्वीकृत की गयी। उच्च समाजार्थिक के स्तर के विषेष पिछड़ी जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अधिक पायी गयी।

परिकल्पना क्रमांक – 08

''उच्च सामाजार्थिक स्तर के विशेष पिछड़ी जनजाति एवं मध्यम सामाजार्थिक स्तर के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जाएगा।''

सारिणी क्रमांक – 08

समूह	न्यादर्श संख्या	प्राप्तांकों का मध्यमान	मानक विचलन	df	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता
उच्च सामाजार्थिक स्तर के वि. पि. जनजाति के विद्यार्थी	09	20.88	1.091	38	2.85	1% विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर है।
मध्यम सामाजार्थिक स्तर के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थी	31	18-16				

उच्च सामाजार्थिक स्तर के विशेष पिछड़ी जनजाति एवं मध्यम सामाजार्थिक स्तर के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों में 1% विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर है। अतः परिकल्पना क्रमांक – 08 स्वीकृत की गयी।

परिकल्पना क्रमांक – 09

''उच्च सामाजार्थिक स्तर के विशेष पिछड़ी जनजाति एवं उच्च सामाजार्थिक स्तर के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर पाया जाएगा।''

सारिणी क्रमांक – 09

समूह	न्यादर्श संख्या	प्राप्तांकों का मध्यमान	मानक विचलन	(df)	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता
उच्च सामाजार्थिक स्तर के वि. पि. जनजाति के विद्यार्थी	09	20.88	1.247	20	2.45	1% विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर है।
उच्च सामाजार्थिक स्तर के अनु. जनजाति के विद्यार्थी	13	80.76				

उच्च सामाजार्थिक स्तर के विशेष पिछड़ी जनजाति एवं उच्च सामाजार्थिक स्तर के अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों में 1% विश्वास स्तर पर सार्थक अंतर है। अतः परिकल्पना क्रमांक – 09 स्वीकृत की गयी।

निष्कर्ष–

शोध में संकलित आँकडों से प्राप्त निष्कर्ष निम्नलिखित हैं–

1. निम्न सामाजार्थिक स्तर के वि. पि. जनजाति के विद्यार्थियों की तुलना में निम्न सामाजिक स्तर के अनु. जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि उच्च पायी गयी।
2. निम्न सामाजार्थिक स्तर के वि. पि. जनजाति के विद्यार्थियों की तुलना में मध्यम सामाजार्थिक स्तर के अनु. जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि उच्च पायी गयी।
3. निम्न सामाजार्थिक स्तर के वि. पि. जनजाति के विद्यार्थियों की तुलना में उच्च सामाजार्थिक स्तर के अनु. जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि उच्च पायी गयी।
4. मध्यम सामाजार्थिक स्तर के वि. पि. जनजाति के विद्यार्थियों की तुलना में निम्न सामाजार्थिक स्तर के अनु. जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि कम पायी गयी।
5. मध्यम सामाजार्थिक स्तर के वि. पि. जनजाति के विद्यार्थियों की तुलना में मध्यम समाजार्थिक स्तर के अनु. जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अधिक पायी गयी।
6. मध्यम सामाजार्थिक स्तर के वि. पि. जनजाति के विद्यार्थियों की तुलना में मध्यम समाजार्थिक स्तर के अनु. जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अधिक पायी गयी।

7. उच्च सामाजार्थिक स्तर के वि. पि. जनजाति के विद्यार्थियों की तुलना में निम्न सामाजार्थिक स्तर के अनु. जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कम पायी गयी।
8. उच्च सामाजार्थिक स्तर के वि. पि. जनजाति के विद्यार्थियों की तुलना में मध्यम सामाजार्थिक स्तर के अनु. जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि कम पायी गयी।
9. उच्च सामाजार्थिक स्तर के वि. पि. जनजाति की तुलना में उच्च समाजार्थिक स्तर के अनुजनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पायी गयी।

सुझाव–

शोध निष्कर्षों के आधार पर निम्नांकित सुझाव प्रस्तुत हैं –
1. अनुसूचित जनजाति एवं विशेष पिछड़ी जनजाति के विद्यार्थियों के लिए विशेष कोचिंग की व्यवस्था की जाए।
2. दृष्य, श्रव्य सामग्रियों के आधार पर रोचक विधियों से सिखाया जाए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. राय, सीमा (1999–2000) : बस्तर जिले की अनुसूचित जनजाति के विभिन्न वर्गों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और रुचि का तुलनात्मक अध्ययन।
2. साहू, तिलक राम (1992–93) : जनजातियों के जीवन स्तर पर उनकी शैक्षिक, सामाजिक तथा आर्थिक स्थितियों के प्रभाव का समीक्षात्मक अध्ययन।
3. अग्रवाल, जे.सी. (2007). शैक्षिक तकनीकी एवं प्रबंध. आगराः विनोद पुस्तक मंदिरअत्री,
4. वी.के. (2005). शैक्षिक तकनीकी के मूलाधार. नई दिल्लीः सुमित इन्टरप्राइजेस.
5. भटनागर ए.बी. एवं भटनागर मीनाक्षी (2005). मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकनआर.लाल बुक डिपो, मेरठ,
6. भगवान (2006). शिक्षा मनोविज्ञान. नई दिल्लीः ओमेगा पब्लिकेशन्स.
7. गुप्ता, एस.पी. (2004). अनुसंधान संदर्शिका सम्प्रत्यय, कार्यविधि एवं प्रविधि. इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन
8. गुप्ता, एस.पी. एवं गुप्ता, ए. (2010). उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान. इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन .
9. कुलश्रेष्ठ, एस.पी. (2006). शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार. आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर
10. पी. एवं गर्ग, एस. (2016). भारत में शिक्षा : स्थिति, समस्याऐं एवं मुद्दे. अग्रवाल पब्लिकेशन
11. एस. (1995). शैक्षिक तकनीकी. जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी. राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा रूप रेखा, राष्ट्रीय. नई दिल्ली : शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2005.
12. पाल,हंसराज (2006), प्रगत शिक्षा मनोविज्ञान, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निर्देशालय, नई दिल्ली
13. पाल, हंसराज एवं शर्मा, मंजुलता (2007). प्रतिभाशालियों की शिक्षा .नई दिल्लीः क्षिप्रा पब्लिकेशन्स
14. डेय, के एवं श्रीवास्तव, एस. (2007). शिक्षा मनोविज्ञान, नई दिल्लीः टाटा मेग्राहिल पब्लिशिंग कम्पनी लिमिटेडपाठक,
15. पी.डी. (2006), शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा 2
16. शर्मा, आर. ए. (2004), शिक्षा अनुसंधान. आर. लाल बुक डिपो, मेरठ.
17. शर्मा, आर. ए. (2005), अधिगम एवं विकास के मनोवैज्ञानिक आधार. आर. लाल बुक डिपो, मेरठ.
18. शर्मा, आर. ए. (2005), शिक्षा तथा मनोविज्ञान में परा एवं अपरा सांख्यिकी अनुसंधान. आर. लाल बुक डिपो, मेरठ.
19. शर्मा, आर. ए. (2005), शैक्षिक एवं मानसिक मापन. आर. लाल बुक डिपो, मेरठ.